Class- B.A(Hons.) SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- आधुनिक उर्दू कविता में राष्ट्रवादी चिंतन ।

जिस प्रकार संस्कृत साहित्य में और हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवादी चिंतन वर्णित हैं उसी प्रकार उर्दू साहित्य में भी हमें राष्ट्रवादि चिंतन विस्तृत रूप से देखने को मिलता है । उर्दू साहित्य में राष्ट्रवादी चिंतन हेतु कुछ प्रमुख उर्दू लेखक हैं जो निम्न प्रकार से है । (According to Syllabus)

1. मुहम्मद इकबाल ।

2. फिराक गोरखपुरी ।

3. सागर निज़ामी ।

4. अफ़सर मेरठी ।

5. अली सरदार जाफ़री ।

मुहम्मद इक़बाल (9 नवम्बर 1877 – 21 अप्रैल 1938) अविभाजित भारत के प्रसिद्ध कवि, नेता और दार्शनिक थे । उर्दू और फ़ारसी में इनकी शायरी को आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ शायरी में गिना जाता है । इकबाल के दादा सहज सप्रू हिंदू कश्मीरी पंडित थे जो बाद में सिआलकोट आ गए ।

फ़ारसी में लिखी इनकी शायरी **ईरान** और **अफ़ग़ानिस्तान** में बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ इन्हें '**इक़बाल-ए-लाहौर**' कहा जाता है । इन्होंने **इस्लाम** के धार्मिक और राजनैतिक दर्शन पर काफ़ी लिखा है ।

मुहम्मद इक़बाल पाकिस्तान का जनक बन गए क्योंकि वह 'पंजाब, उत्तर पश्चिम फ्रंटियर प्रांत, सिंध और बलूचिस्तान को मिलाकर एक राज्य बनाने की अपील करने वाले पहले व्यक्ति थे' । **भारत के विभाजन और पाकिस्तान** की स्थापना का विचार सबसे पहले मुहम्मद इक़बाल ने ही उठाया था ।

1930 में इन्हीं के नेतृत्व में **मुस्लिम लीग** ने सबसे पहले भारत के विभाजन की माँग उठाई । इसके बाद इन्होंने **जिन्ना** को भी मुस्लिम लीग में शामिल होने के लिए प्रेरित किया और उनके साथ पाकिस्तान की स्थापना के लिए काम किया ।

मुहम्मद इक़बाल पाकिस्तान में राष्ट्रकवि माने जाते हैं । इन्हें **अलामा इक़बाल** (विद्वान इक़बाल), **मुफ्फकिर-ए-पाकिस्तान** (पाकिस्तान का विचारक), **शायर-ए-मशरीक़** (पूरब का शायर) और **हकीम-उल-उम्मत** (उम्मा का विद्वान) भी कहा जाता है ।

पाकिस्तान बनाने में अग्रणी होने के संबंध में जिन्ना पर इकबाल का प्रभाव बेहद महत्वपूर्ण, शक्तिशाली और यहां तक कि निर्विवाद के रूप में वर्णित किया गया है । मुहम्मद इक़बाल ने जिन्ना को लंदन में अपने आत्म निर्वासन को समाप्त करने और भारत की राजनीति में फिर से प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया था ।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं: असरार-ए-ख़ुदी, रुमुज़-ए-बेख़ुदी और बंग-ए-दारा, जिसमें देशभक्तिपूर्ण **'तराना-ए-हिन्द (सारे जहाँ से अच्छा)'** शामिल है । मुहम्मद इक़बाल ने

हिन्दुस्तान की आज़ादी से पहले **"तराना-ए-हिन्द"** लिखा था, जिसके प्रारंभिक बोल- **"सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा"** कुछ इस तरह से थे।

उस समय वो इस सामूहिक देशभक्ति गीत से अविभाजित हिंदुस्तान के लोगों को एक रहने की नसीहत देते थे और वो इस गीत के कुछ अंश में सभी धर्मों के लोगों को **'हिंदी है हम वतन है'** कहकर देशभक्ति और राष्ट्रवाद की प्रेरणा देते है।

मुहम्मद इक़बाल पाकिस्तान के लिए **"तराना-ए-मिली" (मुस्लिम समुदाय के लिए गीत)** लिखा। यह उनके 'मुस्लिम लीग' और "पाकिस्तान आंदोलन" समर्थन को दर्शाता है।

सारे जहाँ से अच्छा या **तराना-ए-हिन्दी** उर्दू भाषा में लिखी गई देशप्रेम की एक ग़ज़ल है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश राज के विरोध का प्रतीक बनी और जिसे आज भी देश-भक्ति के गीत के रूप में भारत में गाया जाता है। इसे अनौपचारिक रूप से भारत के राष्ट्रीय गीत का दर्जा प्राप्त है।

इस गीत को प्रसिद्ध शायर मुहम्मद इक़बाल ने 1905 में लिखा था और सबसे पहले सरकारी कालेज, लाहौर में पढ़कर सुनाया था। यह इक़बाल की रचना **बंग-ए-दारा** में शामिल है। उस समय इक़बाल लाहौर के सरकारी कालेज में व्याख्याता थे।

उन्हें लाला हरदयाल ने एक सम्मेलन की अध्यक्षता करने का निमंत्रण दिया। इक़बाल ने भाषण देने के बजाय यह ग़ज़ल पूरी उमंग से गाकर सुनाई।

यह ग़ज़ल हिन्दुस्तान की तारीफ़ में लिखी गई है और अलग-अलग सम्प्रदायों के लोगों के बीच भाई-चारे की भावना बढ़ाने को प्रोत्साहित करती है। 1950 के दशक में सितार-वादक पण्डित रवि शंकर ने इसे सुर-बद्ध किया।